''कक्षा XI के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य अन्तर तथा उनका शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का विश्लेषण''

An Analysis of Difference Between Schedule Caste and Non Schedule Caste Students of Class XI in Terms of Emotional Intelligence and Academic Anxiety and Their Relationship with Scholastic Achievement

A Research Synopsis
शोध–प्रारूप

Submitted
By
Asha Sain
Research Scholar

Under Supervision of
Dr. Nagendra Singh
Head of Department
Regional Institute of Education (NCERT), Ajmer

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

2016

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. **ASHA SAIN** on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have ……………….. (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is ……………………… (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

डॉ. नगेन्द्र सिंह

Dr. Nagendra Singh
Signature of the
Professor & Dean (Research)
Supervisor with date
Regional Institute of Education (N.C.E.R.T.) Ajmer

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. **ASHA SAIN** For research work if he/she registered for Ph.D.

Signature of the Principal
Director of the Institution with date
R. I. E. AJMER

CERTIFICATE

This is to certify that Mrs. ASHA SAIN D/o Mr. POORAN MAL SAIN has qualified the course work of paper 2 and paper 3 for Registration for the Ph.D. programme in the REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION (R.I.E.) Ajmer

Supervisor

Signature of Head,
Department with date

Dr. Nagendra Singh
Professor & Dean (Research)
Regional Institute of Education (N.C.E.R.T.) Ajmer

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

1.	Name of Scholar (In English)	:	**ASHA SAIN**
	(In Hindi)	:	आशा सैन
2.	Title of Research Work (In English)	:	"An Analysis of Difference Between Schedule Caste and Non Schedule Caste Students of Class XI in Terms of Emotional Intelligence and Academic Anxiety and Their Relationship withScholastic Achievement"
			''कक्षा XI के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य अन्तर तथा उनका शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का विश्लेषण''
3.	Location		
	(a) Institute / Department where the work is to be done	:	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.) अजमेर – 305004, राज.
	(b) Geographical area of Investigation, if any	:	Ajmer

4. प्रस्तुत शोध प्रस्तावना, महत्त्व एवं उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना –

शिक्षा का मूल प्रयोजन व्यक्ति को बेहतर इंसान बनाना है, कविवर सुमित्रा नन्दन पंत के शब्दों में –

सुन्दर सुमन, विहग सुन्दर।

मानव तुम सबसे सुन्दतम।।

अच्छी शिक्षा मानव का सर्वांगीण विकास करते हुए उसके व्यक्तित्व को निखारती है शिक्षा का मन्तव्य बालक में उन गुणों को उद्‌भाषित करना है जिससे उसका व्यक्तित्व व सामाजिक जीवन स्वस्थ व सुखमय बने तथा बालक भविष्य में राष्ट्र का उपयोगी नागरिक बन सके।

शिक्षा ने प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय अर्थात् 21वीं सदी तक की एक विशाल लम्बी यात्रा तय की है। इस यात्रा में शिक्षा ने अपना स्वरूप विविध परिस्थितियों में परिवर्तित एवं संवर्धित कर विश्व समुदाय का उचित मार्ग दर्शन किया है।

पहले शिक्षण व्यवस्था वर्ण व्यवस्था पर आधारित थी इन सभी वर्णों का निर्माण कर्म के आधार पर किया जाता था इसका प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति में किए व्यवस्थित रूप से कार्य का नियोजन था।

स्वतंत्रता पश्चात् भारतीय समाज में बहुत से परिवर्तन हुए जिनमें अनुसूचित जाति, जनजाति के लोग उच्च जाति में लोगों की जीवन शैली को पकडने की कोशिश कर रहे है।

सदियों से अनुसूचित जाति के लोगों को समाज से दूर रखा और उनके लिए समाज के सारे द्वार बदले। जिसकी वजह से इन लोगों का स्तर निरन्तर गिरता चला गया।

समाज का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा अनुसूचित जाति का है इन्हें समाज में उचित स्थान पाने के लिए एक लम्बी दूरी तय करनी है।

भारतीय समाज एक पारंपरिक समाज है जो अत्यधिक स्तरीय और व्यापक सामाजिक–आर्थिक असमानता से ग्रस्त है। शिक्षा आयोग (1964–66) की रिपोर्ट के अनुसार ''भारतीय समाज सदियों पुराना है जिसमें कई डिविजन रहे है।'' स्तरीकृत समाज होने के कारण ही यहाँ गरीब और अमीर वर्ग बन गये है। एक ओर तो स्पृश्य और दूसरी तरफ गैर–स्पृश्य समाज बन गया है इसलिए हमारे समाज को अनुसूचित जातियों और गैर अनुसूचित जातियों में बांटा गया है। लेकिन आजादी के बाद समाज में क्रांतिकारी बदलाव आया है जिसे एक महत्त्वपूर्ण विकास की ओर देखा जाने लगा है। वर्तमान अध्ययन अनुसूचित जाति के छात्रों पर केन्द्रित है। कुछ जातियों को एक समय तक उच्च वर्गों द्वारा उपेक्षित किया जाता रहा है। ये जातियां निम्न रही है – अहेरी, बागरी, मोची, जाटव, ढोली, कोली, महावर, रावत, पासी, मेघवाल आदि।

सरकार के अथक प्रयासों के बावजूद हमारे देश की मुख्य धारा में अनुसूचित जाति समाज को अभी पूरी तरह से नहीं जोड़ा जा सका है।

अनु. 46 में कहा गया है कि राज्य विशेष देखभाल के साथ समाज के कमजोर वर्गों में शैक्षिक और आर्थिक हितों का अनुसूचित जातियों के लिए विशेष रूप से विकास करेगा। उन्हें सामाजिक अन्याय और शोषण से मुक्ति दिलायेगा।

तदनुसार संघ और राज्य सरकारों ने इन जातियों के शैक्षिक विकास की दिशा में कई उपायों की शुरूआत की है। जैसे– निरूशुल्क शिक्षा, छात्रवृत्ति, मिड डे मील, आवासीय सुविधा आदि।

यह मुख्य मुद्दा है कि अनुसूचित जातियों के छात्रों के लिए जो विकास की नीतियां और लम्बी अवधि वाले प्रोत्साहन वाले कार्यों व नीतियों को सरकार निकट संपर्क में आने वाले गैर अनुसूचित जाति के छात्रों के साथ बनाये जिसके सार्थक परिणाम निकलेंगे। अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति से सम्बन्धित कई शोध कार्य भारत में हुये उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर, समायोजन की स्थिति पर, मूल्यों पर किन्तु शोध कार्य की सीमा निश्चित नहीं होती है, समस्यायें आती रहती है और शोध कार्य द्वारा उनका समाधान ढूंढा जाता है, इसी प्रसंग में प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक दुश्चिंता को आधार बनाकर उनके संवेगों और शैक्षिक दुश्चिंता का अध्ययन करना है कि हमारे भावों का जीवन में अत्यधिक महत्व है और वर्तमान समय में शिक्षा और मनोविज्ञान का सम्बन्ध संवेगों से उत्तरोत्तर बढ़ रहा है संवेगों और संवेगात्मक बुद्धि लब्धि का अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में नवीन सम्प्रत्यय है।

सर्वप्रथम ''संवेगात्मक बुद्धि'' शब्द का प्रयोग वायेन पायने की डाक्टरल थीसिस में किया गया जिसका नाम था "A Study of Emotion: Developing Emotional Intelligence"

संवेगात्मक बुद्धि का सम्प्रत्य अमेरिकन विश्वविद्यालय के दो प्रोफेसर डॉ. जान मेयर व डॉ. पीयर सावले द्वारा 1990 में दिया गया उन्होंने अपने शोध अध्ययनों द्वारा विभिन्न व्यक्तियों के सांवेगिक पक्ष की योग्यताओं में भिन्नता का अध्ययन किया।

इसके पश्चात् डेनियल गोलमेन ने 1995 में इस सम्प्रत्यय का विस्तार से अध्ययन किया तथा मनोविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में प्रचलित किया। इस कारण संवेगात्मक बुद्धि के सम्प्रत्य का जन्मदाता गोलमेन को ही कहा जाता है।

बायटसिस, हेमकबर और गोलमेन ने संवेगात्मक बुद्धि के चार आयाम प्रस्तुत किये है –

1. स्व–जागरूकता (Self-Awareness) :– इसके अन्तर्गत स्वयं के संवेगों के प्रति जागरूक रहना, स्वयं का सही मूल्यांकन करना और आत्मविश्वास जैसे गुणों को सम्मिलित किया गया है।

2. स्व–प्रबंधन (Self-Management) :– इसके अन्तर्गत स्वनियंत्रण आपसी विश्वास, विवेक, परिस्थिति के अनुसार बदलने की योग्यता निष्पत्ति केन्द्रिता एवं पहल करने की योग्यता को सम्मिलित किया गया है।

3. सामाजिक जागरूकता (Social-Awareness) :– इसके अन्तर्गत परानुभूति संगठनात्मक जागरूकता और सेवा केन्द्रित भावनाओं को सम्मिलित किया गया है।

4. सामाजिक कुशलताएँ (Social Skills) :– इसके अन्तर्गत दूसरों के विकास में सहयोग करना नेतृत्व, प्रभाव, संवाद, जटिल प्रबंधन, सम्बन्ध स्थापित करना, टीमवर्क एवं सहयोग आदि योग्यताओं का समावेश किया गया है।

संवेगात्मक बुद्धि प्रत्येक मनुष्य में पायी जाती है तब इसकी मात्रा विभिन्न मनुष्यों में अलग–अलग होती है। संवेगात्मक बुद्धि एक रामबाण अभियोग्यता है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं की योग्यताओं एवं कमियों की पहचान कर सकता है और योग्यताओं का उपयोग सभी प्रकार के कार्यों को सफलतापूर्वक करने में कर सकता है।

किन्तु आधुनिक युग में कई प्रकार के आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन हो रहे हैं, ये परिवर्तन व्यक्ति को अनेक प्रकार से प्रभावित कर रहे हैं, इन परिवर्तनों के कारण एवं अपनी आयु के संक्रमण काल में किशोर विद्यार्थी आज अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रसित हो गये है जिनका प्रभाव सबसे अधिक उनकी शिक्षा पर पड़ रहा है। किशोर विद्यार्थी को अपने जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में अनेक प्रतियोगिताओं का सामना करना

पड़ रहा है इन बाधाओं को हटाने केलिए किशोर निरंतर प्रयास करते है परन्तु जब निरंतर प्रयास से भी सफलता नहीं मिलती तो वे अनेक दुश्चिंताओं से ग्रसित हो जाते हैं।

अधिकांश माता–पिता यह चाहते हैं कि उनका बालक ही कक्षा में अव्वल आये और 95 प्रतिशत ही लाये। परन्तु सच्चाई यह है कि पढ़ाई लिखाई में कुछ बच्चे अव्वल आ पाते हैं सभी नहीं जो विद्यार्थी उच्च प्राप्तांक नहीं ला पाते है, वे अपने माता–पिता के क्रोध का शिकार हो जाते है।

प्रत्येक किशोर हमेशा अपने जीवन में सफल होना चाहता है परन्तु कई परिस्थितियों में उसे असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

दुश्चिंता शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Anxients शब्द से हुई है जिसका अर्थ उत्तेजना तथा खौफ से होता है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक दुश्चिंता उत्पन्न होने के कारण संवेगों की परिवर्तनशीलता, तीव्रगति से शारीरिक विकास, स्वतंत्रता की अभिलाषा, समायोजन, शैक्षिक चिंता आदि।

इस प्रकार क्रमबद्ध लेख से स्पष्ट है कि संवेगों के अभाव में विद्यार्थी शैक्षिक दुश्चिताओं के शिकार हो जाते हैं जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ता है।

अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिताओं का उनकी अवस्था के संदर्भ में समाधान ढूंढने का प्रयास किया जाना चाहिए। जिससे कि वे अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सके।

4.2. शोध का महत्त्व –

प्राचीन समय में शिक्षा प्रायरू शिक्षक केन्द्रित थी। आज शिक्षा शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण का युग है। आज यह माना जाता है कि शिक्षा एक सहज प्रक्रिया है और इसके द्वारा बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जाता है।

आज का विद्यार्थी कल का नागरिक है अतरू उसके उत्थान के लिए उसके संवेगों पर नियंत्रण और दुश्चिन्ताओं का समाधान करना ही वर्तमान समय की महती आवश्यकता

है। क्योंकि विद्यार्थी में कभी–कभी अनेक क्षमताओं के होते हुये भी संवेगात्मक लब्धि की कमी असफलता का कारण बनती है जिससे वे अनेक शैक्षिक दुश्चिन्ताओं से ग्रसित हो जाते है और अपनी क्षमता के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं कर पाते है।

यदि विद्यार्थी की संवेगात्मक लब्धि बचपन से ही मजबूत हो, तथा अपने में छिपी महाशक्ति पर विश्वास हो, तो वह अद्भुत कर्म कर सकता है।

संवेगों के उचित प्रबन्धन के अभाव में विद्यार्थियों में तनाव, चिंता, कुंठा, भग्नाशा, अवसाद जैसी शिक्षा अवरोधी समस्याएँ जन्म लेती है। संवेगात्मक बुद्धि विद्यालय और कार्यक्षेत्र में सफलता पर निर्भर करती है। छात्रों में संवेगात्मक बुद्धि धृष्टता या आक्रामकता में कमी, अधिक लोकप्रियता एवं सुधारात्मक अधिगम की ओर अग्रसर करती है तथा नशीली दवाओं, धुम्रपान और लिंग सम्बन्धी मामलों में अधिक सही निर्णय लेने की ओर अग्रसर करती है इसके द्वारा छात्रों में उनकी छुपी हुयी और अन्य दक्षताओं को विकसित करने का प्रयास किया जा सकता है। विद्यार्थियों में संवेगात्मक स्थिरता का न होना और शैक्षिक चिंता एक ज्वलंत समस्या है। उपर्युक्त समस्याओं का अपेक्षित समाधान ढूँढना ही प्रस्तुत शोध विषय चयन की महती आवश्यकता रही है।

अतः शोद्यार्थी ने अपने अध्ययन में कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक दुश्चिंता को महत्त्वपूर्ण स्थान देने का प्रयास इसलिए किया क्योंकि वर्तमान संदर्भ में दोनों ही तथ्यों के अध्ययन का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। अतरू संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता के सन्दर्भ में यह शोधकार्य करने का प्रयास किया है एवं अपने अध्ययन में इनका महत्त्व स्थापित किया है साथ ही यह अध्ययन विद्यार्थियों के अलावा शिक्षा से जुड़े अन्य पहलुओं के लिए भी महत्त्वपरक होगा तथा कई विशिष्ट तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस शोध विषय की नींव रखी गई है।

4.3 शोध के उद्देश्य –

बिना उद्देश्य के किसी भी कार्य की रचना रेत की दीवार बनाने के समान है अर्थात् ''प्रयोजन बिना मन्दों प्रवर्तते'' अतरू बिना उद्देश्य के कोई भी कार्य सफल नहीं हो सकता। ठीक इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में किसी शोध अध्ययन के लिए उद्देश्यों के द्वारा ही लक्ष्य प्राप्ति होती है। अतः इस शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए है –

1. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के अजमेर जिले के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर करना।

2. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के अजमेर जिले के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता में अंतर करना।

3. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के अजमेर जिले के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक दुश्चिंता में अंतर करना।

4. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सम्बन्ध का अध्ययन करना।

5. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक दुश्चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सम्बन्ध का अध्ययन करना।

6. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक दुश्चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सम्बन्ध का अध्ययन करना।

5 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन–

1. संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित शोध अध्ययन–

1. ममता गर्यनी – " Emotional Entelligence and personality pattern of college students"

Objectives - A study the relationship between emottion intelligence and personality type of adolescents.

Sample - Adolecents female students of science commerce and arts studying in maharani's college.

Conclusion -EI is not moderated by type of personality but recerotecism is negatively related. The level of EI is average while their intelligence level is higher.

2. S.C. Gakhar - Effect of emotional intelligence and social demographic variables on the acquisition of mathematical concepts.

Objective - To find the effect different levels of emotional intelligence socio economic students.

Sample - A stratified sample of 300 boys and girls studying in class in government and private

Conclusion -All the hypothese were rejected because significant difference was obtained in the acquisition of with emotional between students of govt. and private schools.

3. Pratik Upadhaya - A study of emotional intelligence among student teacher in relation to academic anxiety personality trails and teaching motivation.

Objectives -

(1) To compare the emotional intelligence of male and female students teacher.

(2) To compare the emotional intelligence of students teachers belonging to arts and science streams.

(3) To study the relationship between emotional intelligence and teaching mativation of student teacher.

Talls - Test of emotional intelligences students teachers from prepared by K.S.Misra was used to measure the emotional intelligence of students teachers.

4. Ruchi Dubey - Relationship between emotional intelligence and academic achievements of undergraduate students.

Objectives - To see whether there is a relationship between emotional intelligenece and academic achievement of under graduate students.

Conclusion -It was found is no relationship between emotional intelligence and academic achievement of undergraduate students of arts and science stream.

5. **Debendra Nath Dash** - “Teacher effectiveness in realtion to their emotional intelligence” sample for dreaming a sample of about hundred teacher in the first phase four blocks namely soro bahanaga simulia and khaira were selected randemly.

Conclusion -Emotional intelligence of the teacher is one of the strongest factors for emproving teachers effectiveness.

6. **Swati Patra** - Role of emotional intelligence in educational monagement.

Conclusion -Emotional intelligence can play a crucial role in the successful management of educational organisation.

7. **Nidhi Shrivastava** - A study of emotional intelligence in relation to achievement in environment studies.

Aim - To find out relationship between emotional intelligence and achievement in environmental studies.

To compare the emotional intelligence of high and low achievements in environmental studies.

Conclusion -Emotional intelligenece students may be more emotionaly stable and sensitive to their environmental issues tham their less emotionally intelligent count erparts.

8. **कृष्ण गोपाल (2007)** ग्रामीण एवं शहरी वातावरण का संवेगात्मक लब्धि के सन्दर्भ में विद्यालय के समायोजना का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध के मुख्य उद्देश्य –

1. ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक लब्धि का अध्ययन करना।

2. ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक लब्धि का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. छात्रों में संवेगों पर ग्रामीण और शहरी वातावरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

2. छात्राओं के संवेगों पर वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

9. **डॉ. रेखा गौड़ (2009)** ''उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की संवेगात्मक लब्धि का विद्यालय वातावरण के संदर्भ में अध्ययन''

शोक के मुख्य उद्देश्य :–

1. विद्यालय के वातावरण तथा संवेगात्मक लब्धि का अध्ययन करना।

2. विद्यालय के वातावरण तथा संवेगात्मक लब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

3. विभिन्न विद्यालयी वातावरण में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक लब्धि का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. सरकारी एवं निजी विद्यालयों के वातावरण में अन्तर पाया जाता है।

2. केन्द्रीय विद्यालय एवं सरकारी विद्यालय के वातावरण में भी अन्तर पाया गया।

3. केन्द्रीय विद्यालय एवं मिशनरी विद्यालय के वातावरण का शिक्षकों की संवेगात्मक लब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता।

10. **डॉ. गजब सिंह शशिकान्त सिंह (2010)** – ''माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन।'' इनमें शोध उद्देश्य इस प्रकार रहे– अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण दक्षता पर संवेगात्मक बुद्धि के अवयव स्वजागरूकता में प्रभाव का अध्ययन करना एवं परानुभूति तत्व के प्रभाव का अध्ययन करना।

2. शैक्षिक दुश्चिंता से सम्बन्धित शोध अध्ययन –

1. **गोस्वामी मीनाक्षी (2001)** ने ''कामकाजी एवं काम नहीं करने वाली महिलाओं के बच्चों की उपलब्धि, अभिप्रेरणा एवं दुश्चिंताओं का अध्ययन किया।'' अध्ययन के लिए शिलांग के 10 विद्यालयों के 9वीं कक्षा के विद्यार्थी, जो विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक वर्ग

से सम्बन्धित के पर राव द्वारा निर्मित उपलब्धि, अभिप्रेरणा मापनी और मेहता द्वारा निर्मित चिंता मापनी का प्रारम्भ किया। अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने आया कि कामकाजी महिलाओं की छात्राएँ अन्य सभी छात्र–छात्राओं से अधिक चिंतित थी।

2. **जोशी मनीषा (2002)** ''शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के महाविद्यालयी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक चिंताओं एवं उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन किया।'' जिसके मुख्य उद्देश्य निम्न थे – शहरी परिवेश के छात्र एवं छात्राओं की अलग–अलग चिंताओं की प्रकृति व सीमा को जानकर उनका तुलनात्मक अध्ययन करना। तथा ग्रामीण परिवेश के छात्र एवं छात्राओं की अलग–अलग चिंताओं की प्रकृति व सीमा ज्ञात करके उनका तुलनात्मक अध्ययन करना। जिससे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार रहे अध्ययन करना। जिससे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार रहे कि शहरी छात्र एवं छात्राएँ पढ़ाए जा रहे पाठ्येत्तर, परीक्षा एवं उपलब्धि के प्रति तो चिंतित रहते ही है साथ ही साथ पाठ्येत्तर गतिविधियों के स्तरानुरूप व समय पर न होने से इनकी प्रतिभाओं में प्रकटीकरण में रूकावट आने की आशंका से भी चिंतित रहते है तथा ग्रामीण विद्यार्थी भी शहरी विद्याथियों की तरह सबसे अधिक पाठ्यक्रम के प्रति चिंतित रहते है साथ ही ये परीक्षा एवं उपलब्धि के क्षेत्र में भी चिंतित रहते है।

3. **त्रिवेदी आर.एम. (2005)** ''हायर सैकण्डरी स्तर के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक चिंता के कारणों का अध्ययन किया।'' जिसके उद्देश्य निम्न है, हायर सैकण्डरी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक चिंता के कारणों का अध्ययना करना। इससे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार रहा कि हायर सैकण्डरी स्तर के किशोर विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि को लेकर ज्यादा चिंता रहती है, क्योंकि उन्हें लगता है कि यदि उनकी शैक्षिक उपलब्धि कम रहेगी तो 12वीं कक्षा की परीक्षाओं के उच्चतम प्रदर्शन नहीं कर पायेंगे।

4. **हुसैन एम.क्यू. (2005)** ''दुश्चिंता एवं आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन किया'' जिसमें मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे, सैकण्डरी स्तर के छात्रों की दुश्चिंता एवं आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध ज्ञात करना। तथा इससे प्राप्त निष्कर्ष यह रहा कि निम्न दुश्चिंता स्तर वाले किशोर विद्यार्थियों की तुलना में गैर अनुसूचित दुश्चिंता स्तर वाले की शैक्षिक उपलब्धि उच्च थी।

5. **भदौरिया, मृदुला एवं सिह अनीता (2006)** ''सामाजिक दृष्टि से वंचित वर्ग के किशोर छात्र–छात्राओं के दुश्चिंता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन पर लेख लिखा''

जिसके मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे कि सामाजिक दृष्टि से वंचित किशोर छात्र–छात्राओं की दुश्चिंता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा सामाजिक दृष्टि से वंचित किशोर छात्र–छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना। जिससे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार रहे कि ग्रामीण परिवेश के किशोर छात्रों की दुश्चिंता शहरी मलिन बस्तियों के किशोर छात्रों की तुलना में अधिक है तथा मलिन बस्तियों की किशोर छात्राओं की दुश्चिंता वहाँ के किशोर छात्रों की तुलना में अधिक है।

6. **वर्मा बी.पी. (2007)** ''विभिन्न विद्यालयों के बालकों की बौद्धि योग्यता तथा दुश्चिंता का उपलब्धि पर पढने वाले प्रभाव का अध्ययन किया।'' जिसके मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे कि विभिन्न विद्यालयों के बालकों की बौद्धिक योग्यता और दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव को जानना। इससे प्राप्त निष्कर्ष यह रहा कि निम्न दुश्चिंता वाले बालकों की उपलब्धि अधिक पाई गई जबकि उच्च दुश्चिंता वाले बालकों का उपलब्धि स्तर कम पाया गया।

7. **गुप्ता हेनु (2008)** ''कला एवं विज्ञान संकाय के छात्र एवं छात्राओं की दुश्चिंता आकांक्षा स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन किया'' जिसमें प्राप्त निष्कर्ष यह रहा कि कला एवं विज्ञान दोनों ही संकाय में छात्र–छात्राओं की दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह सम्बन्ध पाया गया। कला एवं विज्ञान दोनों ही संकाय में छात्र एवं छात्राओं के मध्य आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पाया गया। सामाजिक आर्थिक स्तर का समारात्मक एवं सार्थक प्रभाव दोनों संकाय में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पाया गया।

8. **मीणा, महेन्द्र कुमार (2009)** ''विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का उनकी दुश्चिंता एवं उपलब्धियों पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया।'' जिसके मुख्य उद्देश्य थे विद्यार्थियों के आत्मविश्वास तथा शैक्षिक दुश्चिंता के सम्बन्ध का अध्ययन करना तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता एवं उपलब्धि का अध्ययन करना। उससे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार रहे। आत्मविश्वास का शैक्षिक उपलब्धि पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है तथा उपलब्धि स्तर का शैक्षिक दुश्ंिचता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

9. **दुबे रूचिता (2011)** ''कालेज विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, परीक्षा तनाव तथा शैक्षिक दुश्चिंता का अधिगम वातावरण के साथ सम्बन्ध का अध्ययन करना।'' जिसमें मुख्य

उद्देश्य इस प्रकार थे कि अधिगम वातावरण तथा शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना और अधिगम वामावरण तथा परीक्षा तनाव के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना। उससे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार रहे कि अधिगम वातावरण एवं शैक्षिक दुश्चिंता में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है और अधिगम वातावरण एवं परीक्षा तनाव में सार्थक सम्बन्ध है।

10. **पाण्डे राजेश कुमार (2011)** ''उच्च एवं निम्न शैक्षिक दुश्चिंता वाले जनजाति विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन किया।'' जिसके मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे उच्च एवं निम्न शैक्षिक दुश्चिंता वाले जनजाति विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना। इससे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार रहा कि शैक्षिक दुश्चिंता तथा सृजनात्मकता में सार्थक सह सम्बन्ध पाया जाता है जो विद्यार्थी अधिक दुश्चिंतित है उनमें सृजनात्मकता स्तर कम है।

6. Research Gaps indentified in the proposed field of investigation (Based on the review)

सृष्टि में समस्त प्राणी जगत का एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं है। जहाँ पर कोई भी समस्या विद्यमान नहीं है। समस्याओं में इसी महासागर में मानव जीवन की एक विशिष्ट व महत्त्वपूर्ण शाखा ''शैक्षिक जगत'' में समस्याओं का वांछित समाधान करने पर भी किसी ना किसी प्रकार की समस्याओं का उदय होना स्वाभाविक है क्योंकि परिवर्तन ही संसार का नियम रहा है।

किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्त मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है, क्योंकि प्रस्तुत शोधात्मक अध्ययन के परिणाम निःसन्देह राज्य के शैक्षिक सरोमारों के लिए लाभकारी उपागम साबित होगे। इसके साथ–साथ प्राप्त परिणामों के आलोक में भावी परियोजना के निर्माण के आधारों का व्यापक क्षेत्र प्राप्त होगा, कमियों एवं रिसावों का दोहराव नहीं होगा।

प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित चरों पर अलग–अलग अनेक अध्ययन सम्पादित हुए लेकिन कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य अन्तर तथा उनका शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का

विश्लेषण पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालय उपयोगी, समाज उपयोगी एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए फलदायी होगा। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्त मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है एवं शोध कार्य को एक नई दिशा देने वाला है।

7. मुख्य शोध परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध कार्य उसकी पुष्टि करने का प्रयास करती है, परिकल्पना के कथन का स्वरूप एक व्याख्या के रूप में होता है जो अवलोकन या सिद्धान्तों पर आधारित होती है। जब किसी सम्भावित सिद्धान्त की प्रदत्तों व प्रमाणों के आधार पर पुष्टि की जाती है तब उसे परिकल्पना की संज्ञा दी जाती है। शोध की समस्त क्रियाऐं परिकल्पना की पुष्टि से शोध के निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

''परिकल्पना में एक विचार युक्त कथन प्रतिपादित होता है और स्थाई रूप से ही मान लिया जाता है और निरीक्षण प्रदत्तों, तथ्यों तथा परिस्थितियों के आधार पर व्याख्या की जाती है जो आगे शोध कार्यों को निर्देश देता है।''

– जॉन डब्ल्यू. वेस्ट

इस शोध कार्य के लिए शोद्यार्थी ने निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है –

1. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के अजमेर जिले के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के अजमेर जिले के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के अजमेर जिले के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

5. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक दुश्चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

6. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक दुश्चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

8. शोध प्रविधि (Research Methodology) –

8.1 शोध विधि –

अध्ययन विधि से शोधार्थी का तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्थानुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है। अध्ययन विधि उस विधि को सूचित करती है जिस पर चलकर सत्य की खोज की जा सके।

प्रस्तुत शोध में विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला गया कि शोध समस्या के मुख्य उद्देश्य अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि से अधिक सम्बन्धित है। अतः शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

8.2 न्यादर्श –

शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में राजस्थान के अजमेर जिले के कक्षा 11 के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत 400 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

चयनित न्यादर्श को इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है –

न्यादर्श का वितरण

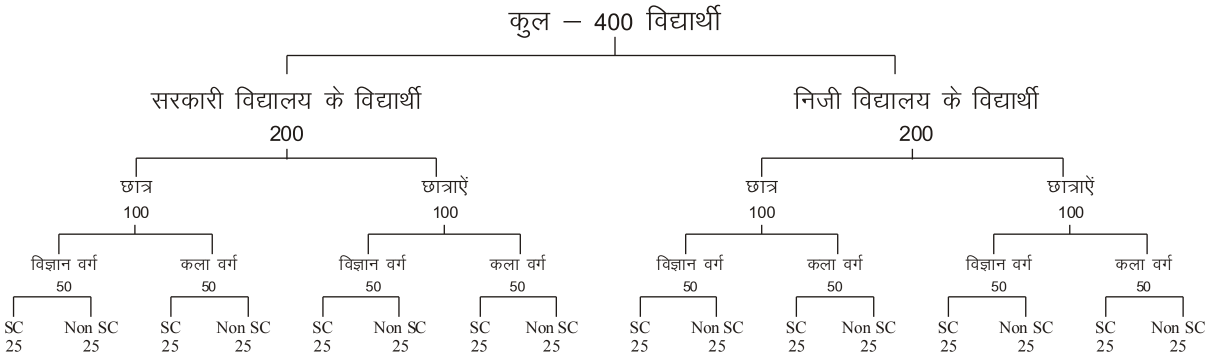

8.3 शोध के उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित प्रमाणीकृत उपकरणों का प्रयोग प्रस्तावित है –

1. सवेगात्मक बुद्धि मापनी :– शोधार्थी द्वारा कक्षा 11 के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करने के लिए Anukool Hyde (indore), Sanjyot Pethe (Ahmedabad) Upinder Dhar (Ahmedabad) द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

2. शैक्षिक दुश्चिंता मापनी :– शोधार्थी द्वारा कक्षा 11 के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता अध्ययन करने के लिए Dr. A.K. Singh (Patna), Dr. (M.S.) A. Sen Gupta (Patna) द्वारा निर्मित शैक्षिक दुश्चिंता मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

8.4 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोधकार्य में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा–

1. मध्यमान, 2. प्रमाण विचलन, 3. टी–मान, 4. सह सम्बन्ध

8.5 अध्ययन का सीमांकन–

प्रस्तुत शोधकार्य अजमेर जिले के कक्षा 11 के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित रहेगा।

समस्या कथन –

प्रस्तुत समस्या शोध कार्य के अन्तर्गत ''अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य अन्तर तथा उनका शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का विश्लेषण'' करना है।

8.6 प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या –

समस्या से सम्बन्धित चरों को स्पष्ट करने से शोध कार्य को नई दिशा मिलती है। अतरू सम्बन्धित चरों का परिभाषीकरण इस प्रकार किया गया है।

परिभाषिक शब्दावली

1. **विद्यार्थी :–** विद्या अथवा शिक्षा अर्जित करने की लालसा रखने वाला प्रत्येक प्राणी विद्यार्थी कहलाता है।

2. **संवेगात्मक बुद्धि :–** संवेगात्मक बुद्धि दो पदों संवेग व बुद्धि से मिलकर बना है। संवेग का अंग्रेजी पर्याय Emotion है। शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द Emovere से हुई है जो कि उद्दीपन करने वाला ''हलचल मचाने वाला'', 'उलथ पुथल' या क्रान्ति उत्पन्न करने जैसे अर्थों में प्रयुक्त होता है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई बुद्धि की व्याख्याओं और दी गई परिभाषाओं के आधार पर बुद्धि की परिभाषा उसके लक्षणों के आधार पर निम्न वर्गों में बांटा जा सकता है– श्वातावरण के प्रति समायोजन की योग्यता''

कालविन – ''एक व्यक्ति उसी अनुपात में वृद्धि करता है जिस अनुपात में वह अपने वातावरण में समायोजित होने की क्रिया सीख चुका है या सीख सकता है।''

3. **अनुसूचित जाति :–** अनुसूचित शब्द का अर्थ है तालिका अर्थात सूचिबद्ध। साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि ऐसी कोई भी चीज जिसकी विशेष तालिका तैयार की गई हो भारतवर्ष में जिन जातियों को समाज की सामाजिक, शैक्षिक व आर्थिक आधार पर कमजोर माना गया है उन्हें अन्य जातियों के समान सामाजिक सुविधाएँ प्रदान करके दूसरे लोगों के समान लाया जावे। इस आधार पर इन जातियों की सूचि बनाई है। भारतवर्ष में वर्ण व्यवस्था तथा जाति व्यवस्था यहां के समाज की एक विशेषता रही है। अनुसूचित

जातियों में 59 जातियाँ है, किन्तु बहुसंख्या में चमार, जाटव, मोची, रेगर, खटीक आदि है। जो चमड़े के व्यवसाय से सम्बन्धित है। इन वर्गो के विकास हेतु संविधान के भाग 16 में अनुच्छेद 330 से अनु. 342 में विशेष प्रावधान किये गये है।

4. **विद्यालय :–** विद्या + आलय इसका शब्दिक अर्थ विद्या का घर या विद्या का आलय है।

विद्यालय को उनमें संचालन के आधार पर दो भागों में बांटा जा सकता है –

1. राजकीय विद्यालय (सरकारी विद्यालय) :– ऐसा विद्यालय जिनका पूरा संचालन सरकार के कानूनों के अनुरूप चलता है। विद्यालय प्रशासन तथा कर्मचारियों को वेतन सरकार द्वारा प्राप्त होता है।

2. अराजकीय विद्यालय (निजी विद्यालय) :– ऐसे विद्यालय जिनका पूरा संचालन निजी संस्था या समुदाय द्वारा होता है ऐसे विद्यालय में कर्मचारियों को वेतन संस्था द्वारा ही दिया जाता है।

5. **शैक्षिक दुश्चिंता :–** दुश्चिंता शब्द अंग्रेजी के Anixety का हिन्दी अर्थ उद्वेलना की स्थिति है। मन की अत्यधिक तनावपूर्ण स्थिति ही दुश्चिंता है।

अतीत मन की वह तनावपूर्ण स्थिति जिसमें विद्यार्थी अपने शैक्षिक जीवन की सफलता में संदेह से आशांकित रहता हुआ उपलब्धि स्तर को प्रभावित करें, वह स्थिति शैक्षिक दुश्चिंता कहलाती है।

फ्रायड के अनुसार – ''मन, स्नायु, विकृति, लैंगिक वासना के दमन का कारण दुश्चिंता है।''

6. **गैर अनुसूचित जाति :–** अनुसूचित जाति के अलावा सभी जाति के विद्यार्थियों को वर्तमान अध्ययन के लिए लिया गया है।

7. **शैक्षिक उपलब्धि :–** शैक्षिक उपलब्धि बालक के उन क्रियाकलापों का प्राप्त परिणाम है जो उनकी विद्यालय की शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों के आधार पर प्राप्त होती है। उपलब्धि परीक्षण के द्वारा ही विद्यालय में विषय सम्बन्धी ज्ञान की परीक्षा एवं विभिन्न कक्षाओं में पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाता है। अध्यापक प्रत्येक छात्र के सम्बन्ध में

जानकारी प्राप्त करना चाहता है कि उसने सम्बन्धी विषयों में जानकारी कितनी मात्रा में प्राप्त की है शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का सम्बन्ध वर्तमान से है।

इबेब – ''उपलब्धि परीक्षा वह अभिकल्य है जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान कुशलता या क्षमता का माप करता है।''

शैक्षिक उपलब्धि – शैक्षिक विषयों में छात्रों द्वारा प्राप्त योग्यता एवं कौशल जिसे साधारण परीक्षाओं में प्राप्तांकों से मापा जाता है।

उपलब्धि – बालक विद्यालय में सीखता है किसी भी क्षेत्र में अर्जित ज्ञान को उपलब्धि कहते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि – किसी भी बालक व बालिकाओं के वार्षिक परीक्षाओं के अंक ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि मानी जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography)

1. पाठक, पी.डी. (2009) ''शिक्षा मनोविज्ञान'' : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
2. शाह, एम.ए. (2009) ''मनोविज्ञान परीक्षण'' : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. श्रीवास्तव, डी.एन. (2009) ''सांख्यिकी व मापन'' : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
4. भटनागर, ए.बी. मीनाक्षी (2008) ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' : आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
5. शर्मा, आर.ए. (2008) ''शिक्षा अनुसंधान'' : आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
6. उपाध्याय, भार्गव एवं त्यागी (2007) ''अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षण'' : अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
7. शर्मा, आर.ए. (2006) ''शिक्षा तकनीकी'' : कमल बुक डिपो, मेरठ
8. भार्गव महेश (2006) ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षा एवं मापन'' : एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, कचहरी घाट, आगरा
9. सिंह अरूण कुमार (2005) ''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'' : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाश, पटना
10. वर्मा, रामपाल सिंह (2004) ''व्यवहारिक मनोविज्ञान'' : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
11. वर्मा रामपाल सिंह एवं उपाध्याय, राधावल्लभ (2001) ''शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान'' : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
12. भार्गव, महेश (1999) ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षा एवं मापन'' : कमल नगर, प्रिंटिंग पैलेस, आगरा
13. कुपा, आर. एण्ड स्वाफ ए. (1997) ''एक्सकूटीव ई क्यू'' : ओरीयन्ट बुक्स न्यूयॉर्क
14. गुप्ता, एस.पी. (1996) ''शिक्षा तथा मनोविज्ञान में आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' : शारदा पुस्तक, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहबाद
15. वर्मा, प्रीति, श्रीवास्तव डी.एन. (1996) ''मनोविज्ञान और शिक्षा सांख्यिकी'' : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

Books:

1. Adelson, N : Handbook of Adolscent psychology, John wiley and sons Inc, New York, 1980.

2. Adams N.F. : Understading Adolescence, London Allyin and Bacon Inc Boston, 1975.

3. Buch M.B. : Survey of Research in Education in India, NCERT, New Delhi.

4. Best W. John : Research in Education, Prentice Hall of India, New Delhi.

5. Bhatia Hans Raj : Abnormal Psychology, Oxford and IBH publishing co. 3rd (ed.) 1977.

WEBLIOGRAPHY:

1. http://drum.vmd.edu/dspace/handle/1903/2

2. http://hd.handle.net/1903/2108.

3. www.uis.edu/archieves/theses

4. http://find articles.com/p.articles

5. www.higheredcenter.org/pubs/prevpdates/depression.html.

JOURNALS:

1. American Journal of Health Studies, 2000

2. Journals of Development 2004.

3. Journals of Abnormal Psychology, U.S. Kluwer.

4. Journal of Anxiety Disorder

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

Name and Signature of Supervisor with date & Seal.

डॉ. नगेन्द्र सिंह
Dr. Nagendra Singh
....
आचार्य, एवं अधिष्ठाता शोध
Professor & Dean (Research)
....
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.) अजमेर
Regional Institute of Education (N.C.E.R.T.) Ajmer
....